Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.III/April; 12pp.1-4 डॉ. सपना तिवारी ISSN:-2230-7850

Research Papers

डॉ. रामविलास शर्मा का हिंदी भाशा चिंतन एवं हिंदी प्रेम

डॉ. सपना तिवारी
सिंधु महाविद्यालय,
नागपुर

प्रस्तावना :–

डॉ. रामविलास शर्मा हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार, यशस्वी आलोचक और विश्व ख्याति के भाषाविद् एवं मनीषी विद्वान के रूप में विख्यात हैं। हिंदी साहित्य के अंतर्गत बहुत कम हिंदी साहित्यकार ऐसे हैं, जिन्होंने भाषा चिंतन तथा विशेष रूप से हिंदी भाषा चिंतन पर विचार किया हो । उनका चिंतन बहुमुखी था । वे विश्व के उन विशिष्ट लेखकों में से चमकते तारे की भाँति हैं, जिन्होंने साहित्य की आलोचना के साथ–साथ भाषा विज्ञान के क्षेत्र में भी अपनी नवीन प्रस्थानाओं द्वारा उसे नई दिशा प्रदान की । डॉ. शर्मा का मानना है कि भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । इसलिए वे हिंदी भाषा, हिंदी जाति और इसकी सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के गहन अध्ययन की ओर प्रवत्त हुए ।

वैसे तो सभी जानते हैं कि डॉ. शर्मा अंग्रेजी के अध्यापक रहे परंतु हिंदी के प्रति विशेष लगाव उन्हें प्रारंभ से ही था । हिंदी के प्रति सतत रूचि व हिंदी में पढ़ने–लिखने की लगन ने ही उन्हें हिंदी प्रेमी बना दिया। तीन खंडों में प्रकाशित डॉ. शर्मा की आत्मकथा 'अपनी धरती अपने लोग' में उनके हिंदी प्रेम की झलक अनेक स्थलों में अनेक रूपों में विद्यमान है। 1935 में अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा – ''कुछ भी हो, मैं यह छिपाना नहीं चाहता कि मेरे जीवन का ध्येय हिंदी साहित्य की सेवा ही है। आज जब दूसरे प्रांतों के लोग भारत के कोन–कोने में हिंदी प्रचार का बीड़ा उठाते हैं, तब क्या हमारे लिए लाज की बात नहीं कि हिंदी में ऊँचे दर्जे की पुस्तकें नहीं है, जिससे हिंदी भाषा सीखने का अन्य प्रांतवासियों को लाभ हो सके। होना तो यही चाहिए था कि आज संसार के किसी भी भाषा के साहित्य के सामने हिंदी को नीचाा देखना न पड़ता। परंतु अपने ही देश की भाषाओं के सामने वह सर नहीं उठा सकती। हिंदुस्तान की उन्नति के लिए हिंदी साहित्य की उन्नति अनिवार्य है।'' (1)

डॉ. शर्मा बहुआयामी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में लिखा है। अपने लेखन का प्रारंभ उन्होंने कविता और नाट्य लेखन से किया। नाटककार के रूप में तो नहीं लेकिन कवि के रूप में उनकी पहचान बनी। उनका पहला कविता संग्रह 'रूपतंरग' 1956 में प्रकाशित हुआ। 1960 में बुल्गारिया के कवि वप्सारोव की कविताओं का हिंदी अनुवाद किया जो 'कविताएँ' नाम से प्रकाशित हुआ। 'सदियों से सोए उठे' कविता संग्रह 1988 में प्रकाशित हुआ। पत्र–पत्रिकाओं के अतिरिक्त 'तारसप्तक' में सहयोगी कवि के रूप में उनकी कविताएँ प्रकाश में आई। 1996 में उनकी आरंभिक कविताएँ 'बुद्ध वैराग्य तथा अन्य कविताएँ' शीर्षक से प्रकाशित हुई। डॉ. शर्मा ने एक उपन्यास की भी रचना की जो 1936 में प्रकाशित हुआ। उनके द्वारा लिखे कई नाटक समय–समय पर मंचों पर खेले गए। 'सूर्यास्त', 'पाप के पुजारी', 'तुलसीदास', 'जमींदार कुलबोरन सिंह' और 'कानपुर के हत्यारे' आदि नाटकों का उल्लेख डॉ. विजयमोहन शर्मा ने अपने एक लेख में किया है। इनका एक प्रहसन 'महाराज कठपुतली सिंह' 1946 में प्रकाशित हुआ।

सन् 1934 में 'चाँद' के लिए अपना पहला आलोचनात्मक लेख लिखकर हिंदी समालोचना के क्षेत्र में कदम रखा। उनकी विद्वता, भाषाधिकार प्रमाणित बात कहने की आदत, वैज्ञानिक दृष्टि, निष्पक्षता आदि गुणों ने उन्हें सफल आलोचक बनाया। निश्पक्षता के गुण ने जहाँ एक ओर उनसे बेहिचक आलोचना कराई है वहीं दूसरी ओर छोटे–छोटे लेखकों को यथोचित सम्मान भी दिलवाया है। उनमें अहंकार नाम मात्र को भी नहीं था। प्रायः जाने माने विद्वान नवोदित साहित्यकारों की उपेक्षा करते हैं किंतु वे किसी भी नए रचनाकार का उद्धरण बड़ी उदारता से अपनी रचना में देते रहे। यह उनकी विष्पक्षता ही है, जो वे एक ओर पंत और राहुल जैसे ख्याति लब्ध साहित्यकारों को नहीं बख़्शते दूसरी ओर नए रचनाकारों की बांछनीय सराहना की है। उनके प्रगतिशील आलोचनात्मक लेखन के लिए श्री नारायणजी का मत है – 'डॉ. शर्मा, आचार्य रामचंद्र

Please cite this Article as : *डॉ. सपना तिवारी* **,** *डॉ. रामविलास शर्मा का हिंदी भाशा चिंतन एवं हिंदी प्रेम* **: Indian Streams Research Journal (April ; 2012)**

शुक्ल के पश्चात् महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।

रामविलास शर्मा ने हिंदी में संत साहित्य, भारतेंदु युग, छायावाद, प्रेमचंद, निराला आदि पर अत्यंत सुलझे हुए विचार व्यक्त किए है। संत कवियों के विषय में वे लिखते हैं – 'सदियों के सामंती शासन की शिला के नीचे जन साधारण की सहृदयता का जल सिमट रहा था, संत कवियों की वाणी के रूप में यह अचानक फूट पड़ा और उसने समूचे भारत को रस सिक्त कर दिया। प्रेमचंद की जनवादी चेतना के वे मुक्त कंठ से प्रशंसक हुए। प्रेमचंद की समीक्षा संबंधी 'प्रेमचंद और उनका युग' पुस्तक 1951–52 में प्रकाशित हुई। उनका कथन है – ''हिंदुस्तान के किसानों को प्रेमचंद की रचनाओं में जो अभिव्यंजना मिली, वह भारतीय साहित्य में बेजोडत्र है। 'निराला' के काव्य चिंतन से वे अत्याधिक प्रभावित थे। 1946 में 'निराला की साहित्य साधना' उनकी पहली पुस्तक प्रकाशित हुई। नई कविता और अस्तित्ववाद पर भ उन्होंने एक ग्रंथ की रचना की। भारतेंदु युग की नव्य चेतना और नवजागरण ने भी उन्हें प्रभावित किया। इस युग की संवेदना और प्रगतिशील चेतना को पहचानते हुए 'भारतेंदु हरिश्चं और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ ' तथा भारतेंदु युगब और हिंदी भाषा की विकास परंपरा समीक्षात्मक पुस्तकें लिखी।

लेखन के प्रति जैसी निष्ठा और समर्पण का भाव डॉ. शर्मा में मिलता है, वैसा हिंदी में कम ही लेखकों में मिलता है। जब उनहें झॉसी के एक कॉलेज में प्रधानाचार्य का पद दिए जाने का प्रस्ताव रखा गया, जिसके पक्ष में उनके पिता भी थे। परंतु उन्होंने अस्वीकार कर दिया क्योंकि यदि वे प्रधानाचार्य बन गए तो उनका लिखना पढ़ना हाथ से चला जाएगा। डॉ. शर्मा का भाषा विषयक गहन चिंतन और विवेचन ही हिंदी साहित्य को सबसे बड़ी देन है। वे हिंदी के प्रबल समर्थक थे। किंतु उनका समर्थन केवल भावनाओं पर आधारित न होकर तर्कों पर आधारित था। भाषा और समाज का घनिष्ठ संबंध मानते हुए उन्होंने भारत की भाषा समस्या और राष्ट्रभाषा और हिंदी की स्थिति पर व्यापक रूप से विचार किया है। उनका हिंदी के प्रति मोह इसी चिंतन का परिणाम है। 1961 में प्रकाशित 'भाषा और समाज' ग्रंथ सामाजिक संदर्भ में हिंदी के अध्ययन और अनुशीलन का पहला ऐतिहासिक प्रयास था। 1965 में प्रकाशित 'भारत की भाषा समस्या और राष्ट्रीय विघटन' नामक शीर्षक लेख में उन्होंने अंग्रेजी के स्थान पर राजभाषा के रूप में हिंदी की वकालत करते हुए लिखा है – ''जब तक केंद्र की राजभाषा अंग्रेजी है, तब तक प्रदेशों वहॉ की भाषाएँ राजभाषा नहीं बन सकती।'' राजभाषा के संबंध में राजनीतिक दलों पर भी चोट करते हुए वे लिखते हैं – ''मेरी मॉग भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी के नेताओं से है कि आप सारा प्रादेशिक काम भारतीय भाषाओं में ही कीजिए एक महीने के अंद प्रदेशों में अंग्रेजी की जड़ काट दीजिए। अंग्रेजी भारत में साम्राज्य ढंग से प्रतिष्ठित है। वह प्रत्येक प्रदेश में वहॉ की भाषा के अधिकार को छीनती है। उसे उच्चशिक्षा का माध्यम बनने से रोकती है। राजकाज में, उच्च न्यायालयों में, वहॉ की भारतीय भाषा को अपदस्थ करती है। हमें दृढ़विश्वास होना चाहिए कि अंग्रेजी अनिश्चित काल के लिए एक मात्र या राष्ट्रीय सहभाषा नहीं रहेगी। निश्चित और सीमित अवधि में उसे अपना स्थान छोड़ना होगा।'' (2)

हिंदी भाषा को केंद्र में रखते हुए उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की। अपने जीवन के सांध्यकाल में 'भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश' जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। इसमें ऋग्वेद से लेकर कालीदास तक और विद्यापति से लेकर निराला तक भारत के विस्तृत भूभाग के सांस्कृतिक इतिहास, भाषा और साहित्य का विवेचन है। अपने जीवन के अंतिम समय तक आलोचना विधा को समृद्धि के उच्चतम शिखर तक पहुॅचाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे।

अपने आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के द्वारा भारत ने एशिया और यूरोप की अनेक भाषाओं को प्रभावित किया था। अपनी पुस्तक 'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी' में उन्होंने यह बताने का प्रयास किया कि आर्य भाषाओं का विकास कैसे हुआ और भारत की द्रविड़, मुंडा आदि भाषाओं से उनका संबंध किस प्रकार का था। तथा इन भारतीय भाषाओं की एशिया और यूरोप के देशों में किस प्रकार की भूमिका रही।

डॉ. शर्मा की हिंदी जाति की अवधारणा उनके हिंदी प्रेम को उजागर करती है। 1949 में 'कम्यूनिस्ट' नामक अंग्रेजी पत्र में अपने एक लेख में लिखा – ''हिंदुस्तानी एक कौम है और वह बिहार से लेकर मध्यप्रदेश तक फैली हुई है। इसकी एक सामान्य भाषा है। जो हमारे बोली के क्षेत्र है। जैसे भोजपुरी क्षेत्र, अवधि क्षेत्र, ये स्वतंत्र जातियों के क्षेत्र नहीं है। जो लोग ऐसा कहते हैं वे गलत कहते हैं।'' (3) इसी धारणा के कारण वे इस बात से सहमत थे कि हिंदी भाषी राज्यों को विभाजन करके नए राज्य बनाना अनुचित है बल्कि हिंदी भाषी राज्यों को मिलाकर एक करना उचित है।

डॉ. शर्मा ने हिंदी भाषा के विघटन पर भी चिंता व्यक्त की है। वे हिंदी की उपभाषाओं और बोलियों को हिंदी से पृथक करने के पक्ष में नहीं थे। भाषा और बोली के संबंध में वे कहते हैं कि – ''किसी भी भाषा या बोली की सीमाएँ अचल और सनातन नहीं होती। जिन्हें आज हम भाषा कहते हैं, वे किन्हीं परिस्थितियों में 'बोली' मात्र रह सकती हैं। जिसे हम बोली कहते हैं वह कल 'भाषा' बन सकती है।'' (4)

डॉ. शर्मा का कहना था कि देशप्रेम और भाषा प्रेम दो अलग–अलग वस्तुएँ नहीं है – एक हैं। हमारी भाषा, हमारी राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। वे हिंदी प्रदेश को विभाजित करने वालों तथा हिंदी को बॉटने वालों के विरूद्ध थे। उनका मानना था – ''हिंदी प्रदेश की एकता और उस प्रदेश में हिंदी के व्यवहार का प्रश्न, राष्ट्रीय एकता के साि जुड़ा है।'' (5)

भाषाविज्ञान के क्षेत्र में डॉ. शर्मा की सोच परंपरागत भाषा वैज्ञानिकों से भिन्न हैं। उन्होंने अपने भाषा वैज्ञानिक लेखन में अपने मौलिक स्थापनाएँ की हैं। उन्होंने भाषाविज्ञान के क्षेत्र में मार्क्सवाद को लागू किया। किस तरह उन्हीं के शब्दों में – ''मार्क्सवाद के अनुसार हर चीज़ परिवर्तनशील है और शषा का कोई स्तर ऐसा नहीं है, जो परिवर्तनशील न हो। लेकिन मार्क्सवाद के अनुसार सभी चीज़ें समान गति से परिवर्तित नहीं होती। इसी तरह भाषा में उन तत्वों को पहचानना जरूरी था, जो कम परिवर्तित होते हैं।'' भाषाविज्ञान से संबंधित 'भाषा और समाज' 'राष्ट्रभाषा की समस्या', 'प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी (तीन खंड)', 'आर्य और द्रविड़ भाषा परिवारों का संबंध' आदि भाषावैज्ञानिक ग्रंथ डॉ. शर्मा की हिंदी जगत को महत्वपूर्ण देन है।

साहित्य, भाषाविज्ञान, इतिहास, दर्शन, अर्थशास्त्र, राजनीति ऐसा कौनसा विषय अछूता है जिसमें डॉ. शर्मा की कुशल, प्रबुद्धतापूर्ण कलम न चली हो। वे वैचारिक रूप से मार्क्सवादी थे। किंतु जहॉ उन्होंने अपने समकालीन मार्क्सवादी लेखकों की आलोचना की है, वही मार्क्स की भारत संबंधी अवधारणाओं पर प्रश्न चिह्न लगाया है। मार्क्स के पूर्व भी मार्क्सवाद था और इसका उद्भव भारतीय दर्शन अर्थात वेदों में प्राप्त होता है। उन्हीं के शब्दों में – ''मानव जाति के सांस्कृतिक विकास के लिए भारत की सांख्य, न्याय आदि यथार्थवादी दार्शनिक धाराओं का महत्व तो है ही। प्रकृति को ब्रह्ममय बनाने वाले वेदांत का भी महत्व है।'' (6)

निश्कर्श :–

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डॉ. शर्मा अग्रेजी के प्राध्यापक थे, फिर भी उन्होंने हिंदी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और इस तरह अपनी मौलिक रचनाशीलता से आज न केवल हिंदी जगत में अपितु भारतीय साहित्य में अप्रतिम साहित्यकार के रूप में विख्यात हैं। ''डॉ. शर्मा को यह दृढ़ विश्वास था कि मैं किसी न किसी समय इस हिंदी

Please cite this Article as : *डॉ. सपना तिवारी*, *डॉ. रामविलास शर्मा का हिंदी भाशा चिंतन एवं हिंदी प्रेम* **: Indian Streams Research Journal (April ; 2012)**

सागर की गहराइयॉ नापूँगा और सफल होऊँगा।''(7) आज हिंदी साहित्य में उनका स्थान देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका आत्मविश्वास गलत नहीं था।

डॉ. शर्मा ने मध्यकालीन संत कवियों के आत्म निवेदन मूलक पदों तथा आधुनिक कालीन रवींद्रनाथ जैसे राष्ट्रीय कवि के गीतों की ओर हमारा ध्यान दिलाया है। जिनका दृश्यमान जगत् से घनिष्ठ संबंध है। अपने हिंदी प्रेम के कारण ही उन्होंने उन लोगों की प्रशंसा की है जो हिंदी के पक्षधर हैं और उन लोगों की आलोचना की है जो हिंदी के विरोधी और अगेंजी के पक्षधर हैं। प्रगतिशील विचारधारा के प्रखर आलोचक के रूप में ख्याति प्राप्त करने वाले डॉ. शर्मा भारतीय और यूरोपीय साहित्य संस्कृति और दर्शन पर विचारी करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जब तक भारतीय दृष्टि और भारतीय स्त्रोतों से भारतीय विद्या का अध्ययन नहीं किया जाता, तब तक हम एकांगी उपनिवेशवादी सोच और अराजक निष्कर्षों के सामने बौने बने रहेंगे। उनका मानना था कि ऋग्वेद के अध्ययन के बिना भारतीय चिंतन और दर्शन परंपरा को ठीक से नहीं समझा जा सकता।

डॉ. शर्मा ने भारतेंदु काल की क्रांतिकारी भावनाओं को समझा और नवीन दृष्टि के साथ उनके सारे साहित्य को हमारे समक्ष रखा। हिंदी जगत को डॉ. शर्मा का आभारी होना चाहिए कि उन्होंने हिंदी गद्य के प्रारंभिक काल की प्रगतिशीलता को पहचाना और हिंदी साहित्य में उसके अमूल्य योगदान से हमें परिचित कराया। छायावादी काव्यधारा का उनहोंने अभिनंदन किया और नई रोमांटिक कविता की प्रशंसा करते हुए लिखा – 'नई रोमांटिक कविता ने नायक नायिकाओं की क्रीड़ा के स्थान पर व्यक्ति और उसके भावों विचारों को प्रतिष्ठित किया तथा निष्प्राण प्रतीकों के बदले जीवन भावों के द्वारा वे साहित्य को जीवन के निकट लाए।'' समाज को जीवित रखने और राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में हिंदी कवियों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए अपने ग्रंथ ''भारत भाषा और हिंदी'' में लिखा है – ''अरबी फारसी के विरूद्ध तुलसीदास और भूषण ने हिंदी की प्रताका ऊँची रखी इसलिए कि समाज के जीवित रहने का तात्पर्य हिंदी का जीवित रहना भी था।''

1996 में त्रिनिदाद में आयोजित पॉचवें हिंदी सम्मेलन के अवसर पर विदेश मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रकाशित स्मारिका में अपने संदेश में विश्व में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा – ''विश्वभाषा के रूप में हिंदी का भविष्य उज्जवल है। साम्राज्यवादी प्रभुत्व के दिन गए। हर देश में जनता अपनी राजनीतिक स्वाधीनता के साथ आर्थिक पर निर्भरता से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रही है। इस संघर्ष में विश्व जनता के संपर्क की भाषा हिंदी है। इस संघर्ष में यह जनता जितनी ही आगे बढ़ेगी, उतना ही हिंदी का राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व उजागर होगा।''

संदर्भ ग्रंथ –

1 अपनी धरती अपने लोग (आत्मकथा) खंड3 पृष्ठ 102
2 'राष्ट्रभाषा समस्या' पृष्ठ 149
3 'अपनी धरती अपने लोगे (आत्मकथा) खंड 2 पृष्ठ 224
4 'भाषा और समाज' पृष्ठ 367
5 'भारत की भाषा समस्या और हिंदी' पृष्ठ 291
6 'भारतीय नव जागरण व यूरोप' पृष्ठ 304
7 अपनी धरती अपने लोग (आत्मकथा) खंड3 पृष्ठ 28

Please cite this Article as : *डॉ. सपना तिवारी*, *डॉ. रामविलास शर्मा का हिंदी भाशा चिंतन एवं हिंदी प्रेम* **: Indian Streams Research Journal (April ; 2012)**